कबीर पद १ :-

मन लागो यार फकीरी में ।। टेक।।
कबीरा एक सिंधूर, पुरखा जर दिया न जाय। नयना प्रीतम रम रहा, दूजा कहाँ समाय।।
प्रीत जो लागी भुल गई, पीच गई मन माहि। रूम रूम पियू पियू कहै, मुख की सिरदा नाही। १। टेक.
बुरा भला सबको सुन लीज्यो, कर गुजराना गरीबि में।२। टेक.
सखि बिचारी सत किया, काँटों सेज बिछाय। ले सूती पिया आपना, चहुँ दिश अगन लगाय।।
गुरु गोविन्द दोउ खडे, काके लागूँ पाय। बलिहारि गुरुदेव की, आपने गोविन्द दियो बताय। ३। टेक.
मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा। तेरा तुझको सौंप दें, क्या लागी है मेरा। ४। टेक.
जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहीं। जब अंधियारा मिट गया, दीपक ढेर कम आहि।।
रूखा सूखा खायके, ठंडा पानी पीयो, देख पडोय चोपडि, मत ललचाये जीयो। ५। टेक.
साधु कहावत कठिन है, लम्बा पेड खुजूर। चढे तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना चूर। ६। टेक.
आखिर ये तन खाक मिलेगा, क्यों फिरता महरूरि में। ७। टेक.
लिखा लिखी की है नहीं, देखा देखी बात। दूल्हा दुल्हन मिल गये, फीखी पडी बारात। ८। टेक.
जब लगना था जगत का, तब लग भगति न होय। नाता तोडे हर भजे, भगत कहावे सोय।।
हद हद जाये हर कोई, अनहद जाये न कोय। हद अनहद के बीच में, रहा कबीरा सोय।।
माला कहे है काठ की, तू क्यों फेरे मोय। मन का मनका फेर दे, तो तुरत मिला दूँ तोय। ९। टेक.
जागन में जो दिन करें, सो दिन में लव लाय। सुरत डोर लागी रहे, तार टूट नहीं जाय।।
पाहण पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहाड। ताक यदि चाकी भली, पिस खाये संसार। १०। टेक.
कबीर सो धन संचिये, जो आगे को होय। सीस चढाये गाठरी, जात न देखा कोय।।
हरि सेत हरि संग पडे, समझ देख मन माहि। कहे कबीर जब हरि दिखे, सो हरि हरि जन माहि। ११। टेक.
कहे कबीर सुनो भई साधो, साहेब मिले सुबूरी में। १२। टेक.

कबीर पद २ :-

सोऊँ तो सपने मिलूँ, जागूँ तो मन माहि। लोचन राते सब घडि, बिसरत कबू नाहि।। टेक।।
कबीर शिवसमुद्र की, रटे प्यास प्यास । और बूँद को नागिहे, स्वाति बूँद की आस।।
नयनन अन्तर आँवु तो नयनन झोंप तो हि यूँ। न मैं देखूँ और को, न तोहे देखन यूँ। १। टेक.
जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान। मोल करो तलवार का, पडि रेहन दो म्यान।।
हम तुम्हारो सुमिरन करें, तुम मोहे चेतो नाय। सुमिरन मन कि प्रीत है, सो मन तुम्ही माहि। २। टेक.
ज्यों नयनन में पोतरि, यूँ खालिक घट माहि। मूरख लोग न जानिहे, बाहर ढूँढन जायँ।।
चलती चक्की देखके, दिया कबीरा रोय। दो पट भीतर आयके, साबित गया न कोय। ३। टेक.
क्या मुख है विनती करूँ, लाज आवत है मोय। तुम देखत अवगुन पर, कैसे भावूँ तोय।।
मरिये तो मर जायिये, छूट पडि ये जंजाल। ऐसा मरना तो मरें, दिन में सौ सौ बार। ४। टेक.
शबद शबद सब कोई कहे, शबद के हाथ न पाँव। एक शबद वो शुद्ध करे, एक शबद गिरिधार।।
माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहि। मनुवा तो चहुँ दिशि फिरे, ये तो सुमिरन नाहि। ५। टेक.
उठा बगोला प्रेम का, तिनका उडा आकाश। तिनका तिंका से मिला, तिनका तिनके पास। ६। टेक.
नयनन की कर कोठरि, पुतली पलंक बिछाय। पलकों की चिक डारके, पी को लिया रिझाय। ७। टेक.
हरि से तो जिन हेत कर, कर हरि जन से हेत। माल मिलत हरि देत है, हरि जन हरि ही देत।।
कबीरा संगत साधु की करें, जौ की बूसि खाय। खीर खांड भोजन मिलें, साकट संग न जाय। ८। टेक.

कबीर पद ३ :-

साहेब मेरा एक है, दूजा कहा न जाय। दूजा साहेब जो कहूँ, साहेब खडा रसाय।। टेक।।
माली आवत देखके, कलियाँ करें पुकार। फूले फूले चुन लिये काल ही हमारि बार।।
चाह गई चिंता मिटि, मनुवा बेपरवाह। जिनको कछु न चाहिये, वो ही शाहंशाह।।
हेत प्रीत सूँ जो मिले, ताको मिलिये धाय। अन्तर राखे जो मिले, तासे मिले भलाय। १। टेक.
सब धरती कागद करूँ, लेखन सब वन राय। सात समुन्द्र की मस करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।।
अब गुरु दिल में देखिया, बामण को कछु नाहीं। कबीर जब हम गाँव थे, तब जाना गुरु नाहीं। २। टेक.

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

मैं लगाव से एक से एक भया सब माहि। सब मेरा मैं सबन का देहाँ दूसरा नाहीं।।
जा मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द। कब मरहूँ कब पाऊँ पूरण परमानन्द। ३। टेक.
सब वन तो चन्दन नाहीं, सूरह का दल नाहीं। सब समुन्द्र मोति नहीं, यूँ साधु जग माहि। ४। टेक.
जब हम जग में पग धरो, सब हँसे हम रोये। कबीरा अब ऐसी कर चलो, पाचे हँसि न होय।५।टेक.
अवगुण किये तो बहु किये, करत न मानी हार। भाँवें बंदा बख्शे भाँवें गर्दन मार।।
साधु भूखा बाका, धन का भूखा नाहीं। धन का भूखा जो फिरे, सो तो साधु नाहीं। ६। टेक.
कबीरा ते नर अंध है, गुरु को केहते और। हरि रूठे गुरु ठोर है, गुरु रूठे नहीं ठोर। ७। टेक.
करता था तो क्यों रहा, अब काहे पचतावे। बोवे पेड बबोल का, आम कहाँ से खाय। ८। टेक.
साहेब सूँ सब होत है, बंदे ते कछु नाहीं। राई ते पर्वत करें, पर्वत राई माहि। ९। टेक.
जियूँ तिल माहि तेल है, जियूँ चकमक में आग। तेरा साई तुझ में बसे, जाग सके तो जाग। १०। टेक.

कबीर पद ४ :-

भला हुआ मेरी मटकी फूट रे। मैं तो पनिया भरने से छूटी रे।। टेक।।
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिन खोजा आपना तो मुझ सा बुरा न कोय।।
ये तो घर है प्रेम का, हाला का घर नाहीं। सीस उतारे भूई धरे, तब बैठे घर माहि। १। टेक.
हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या। रहे आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।।
क्हना था सो केह दिया, अब कछु कहा न जाय। एक गया सो जा रहा, दरिया लहर समाय। २। टेक.
लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल। लाल देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।
हँस हँस कुंत न पाया, जिन पाया ति रोय।(माला पाया, अल्ला पाया) हाँसी खेले पिया मिले, कौन सुहागन होय।। जाको राखे साईयाँ, मार सके न कोय। बाल न बाँका कर सके, जो जग वैरी होय।।
प्रेम न बाजी उपजे, प्रेम न हाथ बिताय। राजा पिरजा जो हि रुचे, सीस देई ले जाय। ३। टेक.
कबीरा भाटी का लाल की, बहु तक बैठे आय। सिर सौंपे सो हि पिये नहीं तो पिया न जाय।।
सुखिया सब संसार है, खाये और सोये। दु:खिया दास कबीर है, जागे और रोये।।
जो कछु किया सो तुम किया, मैं कछु किया नाहीं। कहो कही जो मैं किया, तुम्ही थे मुझ माहि। ४। टेक.
अनरातें सुख सोवना, रातें नींद न आये। ज्यों जल छूटे माछली, दलफत रैन बहाय। ५। टेक.
जिनको साँई रंग दिया, कभि न होई कुरंग। दिन दिन बाणि आखरी, चढे सवाया रंग।।
ऊँचे पानी न टिके, नीचे ही ठहराय। नीचा होय सो भर पीये, ऊँचा प्यासा जाय।।
आठ प्रहर चौसठ घडि, मेरे और न कोय। नायना माहि तू बसे, नींद को ठोर न होय। ६। टेक.
सब लगे तांत रवाब, तन विरह बजावे नित्य। और न कोई सुन सके, ये साँई के चित्त।।
कबीरा वैद्य बुलाया, पकड देखी बाँह। वैद्य न वेधन जानी, किरक कलेजे माहि।।
यार बुलावे भाँव सूँ, मोपे गया न जाय। दुल्हन मैली पियू उजला, लाद सकूँ न पाय। ७। टेक.

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM